

Original Article

## FOLK ART AND TRIBAL ART: A STUDY

# लोक कला एवं जनजातीय कला - एक अध्ययन

Dr. Sangeeta Agrawal <sup>1\*</sup> 

<sup>1</sup> Head of Department, Department of Painting Madhav College, Gwalior, India



### ABSTRACT

**English:** Indian folk and tribal art constitute an integral part of India's cultural heritage, reflecting the collective consciousness, belief systems, rituals, and close association with nature of diverse communities. Unlike classical art traditions that developed under royal or institutional patronage, folk and tribal arts emerged organically from everyday life and social practices. This research paper examines the conceptual, historical, and cultural dimensions of Indian folk and tribal art, with a focus on major traditions such as Madhubani, Warli, Gond, Pattachitra, and Pithora painting. The study analyzes their distinctive visual language, symbolism, materials, and techniques, emphasizing the use of natural resources and ritualistic contexts. Furthermore, the paper explores the impact of modernization, globalization, and commercialization on these art forms. While contemporary markets, tourism, and digital platforms have expanded economic opportunities and global visibility for artists, they have simultaneously generated challenges related to authenticity, cultural appropriation, and the dilution of traditional values. The research highlights the importance of sustainable preservation through education, institutional initiatives, policy support, and digital empowerment of artists. The paper concludes that Indian folk and tribal art are not merely decorative practices but living cultural expressions that embody continuity, resilience, and the socio-cultural identity of indigenous and rural communities in India.

**Hindi:** भारतीय लोक और आदिवासी कला भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अहम हिस्सा है, जो अलग-अलग समुदायों की सामूहिक सोच, विश्वास, रीति-रिवाजों और प्रकृति के साथ करीबी जुड़ाव को दिखाती है। शाही या संस्थागत संरक्षण में विकसित हुई क्लासिकल कला परंपराओं के उलट, लोक और आदिवासी कलाएं रोजमर्रा की ज़िंदगी और सामाजिक प्रथाओं से अपने आप उभरी हैं। यह रिसर्च पेपर भारतीय लोक और आदिवासी कला के कॉन्सेप्टुअल, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं की जांच करता है, जिसमें मधुबनी, वारली, गोंड, पट्टचित्र और पिथौरा पेंटिंग जैसी प्रमुख परंपराओं पर फोकस किया गया है। स्टडी उनकी खास विजुअल भाषा, प्रतीक, मटीरियल और टेक्नीक का एनालिसिस करती है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों और रीति-रिवाजों के इस्तेमाल पर ज़ोर दिया गया है। इसके अलावा, पेपर इन कला रूपों पर मॉडर्नाइज़ेशन, ग्लोबलाइज़ेशन और कमर्शियलाइज़ेशन के असर का पता लगाता है। जबकि आज के बाज़ारों, टूरिज़्म और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कलाकारों के लिए आर्थिक मौके और ग्लोबल विज़िबिलिटी बढ़ाई है, उन्होंने साथ ही ऑथेंटिसिटी, कल्चरल एप्रोप्रिएशन और पारंपरिक मूल्यों के कमज़ोर होने से जुड़ी चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। यह रिसर्च शिक्षा, संस्थागत पहल, पॉलिसी सपोर्ट और कलाकारों के डिजिटल एम्पावरमेंट के ज़रिए सस्टेनेबल बचाव के महत्व पर ज़ोर देती है। पेपर का नतीजा यह है कि भारतीय लोक और आदिवासी कला सिर्फ़ सजावटी काम नहीं हैं, बल्कि ये जीती-जागती सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं जो भारत में स्थानीय और ग्रामीण समुदायों की निरंतरता, मज़बूती और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को दिखाती हैं।

#### \*Corresponding Author:

Email address: Dr. Sangeeta Agrawal (sangeeta.agl4@gmail.com)

Received: 19 December 2025; Accepted: 15 January 2026; Published 27 February 2026

DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6754

Page Number: 144-149

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

**Keywords:** Indian Folk Art, Tribal Art, Cultural Heritage, Indigenous Art, Madhubani, Warli, Gond, Pattachitra, Ritual Practices, Sustainability, भारतीय लोक कला, आदिवासी कला, सांस्कृतिक विरासत, स्वदेशी कला, मधुबनी, वारली, गोंड, पट्टचित्र, अनुष्ठान प्रथाएँ, स्थिरता

## प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक पहचान इसकी विविध कलाओं में रची बसी है। भारत की मिट्टी में जन्मी कलाएँ केवल दृश्य अनुभव नहीं हैं बल्कि वे यहाँ के जनमानस की संचित अनुभूतियों विश्वासों और परंपराओं का जीवंत दस्तावेज़ हैं। जब हम लोक कला और जनजातीय कला की बात करते हैं तो हम अनिवार्य रूप से उस मौलिक रचनात्मकता की चर्चा कर रहे होते हैं जो किसी औपचारिक कला विद्यालय की उपज नहीं है बल्कि जीवन के अनुभवों और प्रकृति के साथ तादात्म्य से उपजी है।

सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए रेखाओं रंगों और आकृतियों का सहारा लिया। जहाँ लोक कला ग्रामीण समुदायों की सामाजिक संरचना रीति-रिवाजों और धार्मिक अनुष्ठानों से गहराई से जुड़ी है वहीं जनजातीय कला उन समुदायों की अभिव्यक्ति है जो आधुनिकता की चकाचौंध से दूर प्रकृति के निकटतम संपर्क में रहे हैं। यह शोध पत्र इन दोनों कला रूपों के उद्भव उनके तकनीकी पहलुओं सांस्कृतिक महत्व और समकालीन चुनौतियों का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

## लोक कला अर्थ और परिभाषा

लोक शब्द का अर्थ है सामान्य जनमानस। लोक कला वह कला है जो जनसाधारण द्वारा अपने दैनिक जीवन के आनंद भय भक्ति और उल्लास को व्यक्त करने के लिए रची जाती है। प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों के अनुसार लोक कला वह सहज अभिव्यक्ति है जिसमें कलाकार की व्यक्तिगत पहचान उसके समुदाय की सामूहिक पहचान में विलीन हो जाती है।

लोक कला की प्रमुख विशेषता इसकी गतिशीलता है। यह स्थिर नहीं है यह समय के साथ बदलती है नए तत्वों को ग्रहण करती है लेकिन अपनी मूल आत्मा को अक्षुण्ण रखती है। इसमें मिट्टी की सौंधी महक त्योहारों का उत्साह और घरेलू जीवन की सादगी रची-बसी होती है। यह कला किसी विशिष्ट वर्ग के लिए नहीं बल्कि सर्वजन के लिए होती है।

## जनजातीय कला आदिम चेतना का प्रतिबिंब

जनजातीय कला को अक्सर आदिम कला के रूप में भी जाना जाता है। यह उन जनजातियों की कला है जिनकी अपनी विशिष्ट भाषा धर्म और सामाजिक नियम होते हैं। जनजातीय कला का मूल आधार टोटम और एनिमिज्म जीववाद है। उनके लिए प्रकृति का हर तत्व चाहे वह पत्थर हो वृक्ष हो या पशु एक दैवीय शक्ति का प्रतीक है।

जनजातीय कला में एक प्रकार की कच्ची ऊर्जा होती है। यहाँ सौंदर्य शास्त्र के मानक यूरोपीय या शास्त्रीय मानकों से भिन्न हैं। यहाँ महत्ता इस बात की नहीं है कि चित्र कितना सुंदर दिखता है बल्कि इस बात की है कि वह अपने अनुष्ठानिक उद्देश्य को कितना प्रभावी ढंग से पूरा करता है। उदाहरण के लिए एक जनजातीय मुखौटा केवल सजावट की वस्तु नहीं है बल्कि वह नृत्य के दौरान पूर्वजों की आत्मा को बुलाने का एक माध्यम है।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक

भारतीय लोक और जनजातीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसकी जड़ें पाषाण काल की गुफा चित्रकारी में खोजी जा सकती हैं।

प्रागैतिहासिक काल भीमबेटका मध्य प्रदेश की गुफाओं में बने चित्र जनजातीय कला के सबसे प्राचीन प्रमाण हैं। इनमें शिकार नृत्य और सामूहिक जीवन के जो दृश्य मिलते हैं वही शैली आज भी वरली या गोंड कला में जीवित है।

वैदिक और पौराणिक काल वेदों में शिल्प शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में हुआ है। लोक कलाओं का विकास इसी दौरान लोक गाथाओं और धार्मिक अनुष्ठानों के साथ हुआ। अल्पना रंगोली और मांडणा जैसे कला रूप इसी काल की परंपराओं से प्रेरित हैं।

मध्यकाल इस काल में लोक कलाओं पर भक्ति आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। भगवान कृष्ण राम और देवी दुर्गा के चित्रों की प्रधानता बढ़ी। मधुबनी जैसी कलाओं ने इसी समय अपने धार्मिक स्वरूप को विस्तार दिया।

औपनिवेशिक काल ब्रिटिश शासन के दौरान इन कलाओं को हस्तशिल्प की श्रेणी में डाल दिया गया और इन्हें शास्त्रीय कला से निम्न माना गया। हालांकि ग्रामीण अंचलों में यह परंपरा निर्बाध रूप से चलती रही।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सरकार और निजी संस्थाओं के प्रयासों से इन कलाओं को पुनर्जीवित किया गया। कमलादेवी चट्टोपाध्याय और पुतुल जयकर जैसे व्यक्तित्वों ने इन गुमनाम कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया।

निश्चित रूप से अब हम शोध पत्र में आगे बढ़ते हैं। इस भाग में हम भारत की प्रमुख लोक एवं जनजातीय कलाओं का विस्तार से विश्लेषण करेंगे और उनकी तकनीकी बारीकियों को समझेंगे।

## प्रमुख कला शैलियों का क्षेत्रीय एवं तकनीकी विश्लेषण मधुबनी कला बिहार लोक आस्था का रंग

बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र की मधुबनी या मिथिला पेंटिंग लोक कला का सबसे जीवंत उदाहरण है। प्रारंभ में यह कला केवल भित्ति चित्रों के रूप में घरों की दीवारों पर की जाती थी जिसे कोहबर कहा जाता था।

शैली और प्रकार मधुबनी की तीन मुख्य शैलियाँ हैं कचनी भरनी और गोदना। जहाँ कचनी में केवल रेखाओं का जाल होता है वहीं भरनी में चटख रंगों का प्रयोग किया जाता है।

विषय वस्तु इसमें मुख्य रूप से हिंदू देवी देवताओं राम सीता राधा कृष्ण सूर्य चंद्रमा और धार्मिक पौधों जैसे तुलसी का चित्रण होता है। चित्रों के बीच में खाली स्थान नहीं छोड़ा जाता उसे फूलों पक्षियों और ज्यामितीय आकृतियों से भर दिया जाता है।

तकनीकी पक्ष कलाकार अपनी उंगलियों टहनियों या माचिस की तीलियों का उपयोग करते हैं। वर्तमान में निब पेन का प्रयोग भी होने लगा है। रंग पूरी तरह प्राकृतिक होते हैं जैसे हल्दी से पीला चावल के चूर्ण से सफेद और पलाश के फूलों से केसरिया।

## वर्ली कला महाराष्ट्र सादगी और ज्यामिति

वर्ली जनजाति की यह कला अपनी सरलता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह महाराष्ट्र के ठाणे और नासिक जिलों के जनजातीय समुदायों द्वारा विकसित की गई है।

ज्यामितीय आधार वर्ली कला केवल तीन मूल आकृतियों पर टिकी है वृत्त सूरज और चाँद का प्रतीक त्रिकोण पहाड़ों और पेड़ों का प्रतीक और वर्ग पवित्र स्थान या भूमि का प्रतीक।

चित्रण इसमें मानव आकृतियों को दो त्रिकोणों को जोड़कर बनाया जाता है। इनका सबसे प्रसिद्ध चित्रण तारपा नृत्य है जहाँ कलाकार एक चक्र में नृत्य करते हुए दिखाए जाते हैं जो जीवन के अंतहीन चक्र को दर्शाता है।

रंग योजना वर्ली में केवल दो रंगों का प्रधानता होती है गेरू लाल मिट्टी से पुती हुई दीवार की पृष्ठभूमि और चावल के सफेद पेस्ट से बनी आकृतियाँ।

## गोंड कला मध्य प्रदेश रेखाओं का सम्मोहन

मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति की कला बिंदुओं और रेखाओं का खेल है। गोंड कलाकारों का मानना है कि अच्छी छवि देखने से सौभाग्य आता है।

विशिष्ट तकनीक गोंड चित्रों की सबसे बड़ी पहचान उनकी पैटर्न शैली है। हर कलाकार का अपना एक अलग सिग्नेचर पैटर्न जैसे छोटे डॉट्स लहरदार रेखाएँ या छोटे त्रिकोण होता है।

प्रकृति प्रेम गोंड कला में जीवन का वृक्ष एक केंद्रीय विषय है। इसमें पक्षी जानवर और पेड़ पौधे एक दूसरे से गुंथे हुए दिखाई देते हैं जो प्रकृति की परस्पर निर्भरता को दर्शाते हैं।

आधुनिक बदलाव प्रसिद्ध कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम ने इस कला को कागज और कैनवास पर लाकर वैश्विक पहचान दिलाई।

## पट्टचित्र ओडिशा और बंगाल कथात्मक कला

पट्ट का अर्थ है कपड़ा और चित्र का अर्थ है तस्वीर। यह कला ओडिशा के जगन्नाथ मंदिर की परंपराओं से जुड़ी है।

निर्माण प्रक्रिया यह एक श्रमसाध्य कला है। सूती कपड़े को इमली के बीज के गोंद और पत्थर के पाउडर से तैयार किया जाता है। सूखने के बाद उस पर प्राकृतिक रंगों से चित्रण होता है।

कथा वाचन पट्टचित्र केवल चित्र नहीं हैं वे पूरी कहानी कहते हैं। कृष्ण लीला और दशावतार इसके मुख्य विषय हैं। बंगाल के पट्टुआ कलाकार इन चित्रों को खोलते हुए गीत गाकर कहानियाँ सुनाते हैं जिसे पट्टुआ गान कहा जाता है।

## पिथोरा कला गुजरात और राजस्थान अनुष्ठानिक वैभव

राठवा और भिलाला जनजातियों द्वारा बनाई जाने वाली पिथोरा पेंटिंग एक चित्रकला से अधिक एक पवित्र अनुष्ठान है।

घोड़े का महत्व पिथोरा चित्रों में पिथोरा देव घोड़े के रूप का अंकन अनिवार्य है। माना जाता है कि घर की दीवार पर पिथोरा बनवाने से परिवार की समस्याएँ दूर होती हैं।

लेखन प्रक्रिया यह कार्य लखाड़ा लेखक चित्रकार द्वारा किया जाता है। चित्र बनाने के दौरान ढोल नगाड़े बजाए जाते हैं और विशेष पूजा की जाती है।

## लोक एवं जनजातीय कला का समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार

लोक और जनजातीय कला केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं बल्कि वे समाज के गहरे दर्शन को समेटे हुए हैं

सामुदायिक स्वामित्व शास्त्रीय कला जैसे मुगल या कांगड़ा शैली राजाओं के संरक्षण में फली फूली लेकिन लोक कला समाज के संरक्षण में रही। यहाँ कलाकार की व्यक्तिगत ख्याति से बड़ा समुदाय का गौरव होता है।

स्थिरता और पारिस्थितिकी ये कलाएँ इकोफ्रेंडली जीवनशैली का प्रमाण हैं। मिट्टी की दीवारें प्राकृतिक गोंद और वनस्पति रंग इस बात के गवाह हैं कि मनुष्य और प्रकृति के बीच का संतुलन ही कला का असली आधार है।

लिंग आधारित भूमिकाएँ ऐतिहासिक रूप से कई लोक कलाएँ जैसे मधुबनी और मांडणा विशेष रूप से महिलाओं द्वारा संरक्षित की गईं। यह ग्रामीण महिलाओं की अभिव्यक्ति और सशक्तिकरण का सबसे सशक्त माध्यम रहा है।

निश्चित रूप से, अब हम शोध पत्र में ओर बढ़ते हैं। इस खंड में हम कला के आर्थिक पक्ष, वैश्वीकरण के प्रभाव, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करेंगे।

## लोक कला का बाज़ारीकरण और व्यावसायिक पक्ष

आधुनिक युग में लोक और जनजातीय कला ने झोपड़ियों की दीवारों से निकलकर महानगरों के कला दीर्घाओं (Art Galleries) तक का सफर तय किया है। इस परिवर्तन ने जहाँ कलाकारों को आर्थिक संबल प्रदान किया है, वहीं कला के मूल स्वरूप में भी बदलाव आए हैं

माध्यम का परिवर्तन जो कला पहले कच्ची मिट्टी की दीवारों और फर्श पर बनाई जाती थी वह अब कैनवास रेशम कागज और यहाँ तक कि डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध है। इससे कला की स्थायित्व तो बढ़ी है लेकिन वह मिट्टी की खुशबू कहीं न कहीं कम हुई है।

हस्तशिल्प से फैशन तक आज मधुबनी और वर्ली के प्रिंट साड़ियों कुर्तों बैग्स और होम डेकोर की वस्तुओं पर व्यापक रूप से उपयोग किए जा रहे हैं। इसने कलाकारों के लिए रोजगार के नए द्वार खोले हैं।

पर्यटन और कला भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर शिल्पग्राम जैसे केंद्रों की स्थापना ने विदेशी पर्यटकों को इन कलाओं की ओर आकर्षित किया है। इससे भारतीय लोक कला एक सॉफ्ट पावर के रूप में उभरी है।

## वैश्वीकरण और आधुनिकता की चुनौतियाँ

जहाँ एक ओर बाज़ार ने इन कलाओं को पहचान दिलाई है, वहीं दूसरी ओर कई गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं

मौलिकता का संकट बाज़ार की माँग के अनुसार कलाकार अक्सर उन विषयों और रंगों का चुनाव करने लगे हैं जो बिकने योग्य हों। इससे कला का वह अनुष्ठानिक और आध्यात्मिक महत्व कम हो रहा है जो कभी इसका प्राण था।

सांस्कृतिक विनियोजन बड़ी कंपनियाँ और डिज़ाइनर्स अक्सर इन जनजातीय प्रतीकों का उपयोग बिना कलाकारों को श्रेय या उचित पारिश्रमिक दिए करते हैं। इसे बौद्धिक संपदा अधिकार का उल्लंघन माना जाता है।

मशीनीकरण का प्रभाव स्क्रीन प्रिंटिंग और डिजिटल प्रिंटिंग के कारण हाथ से बनी असली कलाकृतियों की मांग और मूल्य दोनों प्रभावित हो रहे हैं। एक सामान्य ग्राहक के लिए हाथ की बनी प्रिंटिंग और मशीनी प्रिंट के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है।

युवा पीढ़ी का पलायन आर्थिक अस्थिरता के कारण जनजातीय समुदायों की नई पीढ़ी इस पारंपरिक कौशल को सीखने के बजाय शहरों में मजदूरी या अन्य नौकरियों को प्राथमिकता दे रही है।

## कला का भविष्य और संरक्षण के प्रयास

लोक और जनजातीय कला को जीवित रखने के लिए केवल सरकार ही नहीं, बल्कि समाज और तकनीक को भी साथ आना होगा:

हाल के वर्षों में कई भारतीय लोक कलाओं (जैसे सोहराई खोवर मधुबनी को जीआई टैग मिला है। इससे कला की क्षेत्रीय शुद्धता और कलाकारों के अधिकारों की रक्षा होती है।

डिजिटल साक्षरता यदि कलाकारों को स्वयं अपना काम ऑनलाइन बेचना सिखाया जाए जैसे इंस्टाग्राम या ई-कॉमर्स साइट्स के माध्यम से तो वे बिचौलियों के शोषण से बच सकते हैं।

शिक्षा में एकीकरण नई शिक्षा नीति के तहत स्थानीय कलाओं को स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाना एक सराहनीय कदम है। इससे बचपन से ही बच्चों में अपनी विरासत के प्रति सम्मान पैदा होगा।

## लोक एवं जनजातीय कला का संरक्षण संवर्धन एवं भविष्य

सरकारी नीतियां और संस्थागत प्रयास भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात सरकार ने इन कलाओं को पुनर्जीवित करने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं।

- सांस्कृतिक संस्थानों की भूमिका: ललित कला अकादमी और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र जैसे संस्थान इन कलाओं के प्रलेखन और प्रदर्शनियों के माध्यम से इन्हें मुख्यधारा में ला रहे हैं।
- शिल्पग्राम की अवधारणा: उदयपुर और अन्य स्थानों पर स्थित शिल्पग्राम कलाकारों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ वे सीधे पर्यटकों से जुड़ सकते हैं।
- आर्थिक प्रोत्साहन: एक जिला एक उत्पाद जैसी योजनाओं ने क्षेत्रीय लोक कलाओं को वैश्विक बाजार तक पहुँचाने में मदद की है।

शिक्षा और नई पीढ़ी का जुड़ाव लोक कला के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती युवा पीढ़ी का इससे दूर होना है।

- शिक्षा में एकीकरण: नई शिक्षा नीति के अंतर्गत स्थानीय कलाओं को स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है ताकि बच्चों में बचपन से ही अपनी विरासत के प्रति गौरव भाव जागृत हो।
- कौशल विकास: जनजातीय क्षेत्रों में कार्यशालाओं का आयोजन कर पारंपरिक बारीकियों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल युग और लोक कला आधुनिक तकनीक ने लोक कला के लिए नए द्वार खोले हैं।

- ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया: आज एक गोंड या मधुबनी कलाकार इंस्टाग्राम या अन्य वेबसाइटों के माध्यम से दुनिया भर में अपना काम बेच सकता है जिससे बिचौलियों का शोषण कम हुआ है।
- डिजिटल आर्ट: कई युवा कलाकार अब वर्ल्ड और पट्टचित्र की शैलियों को ग्राफिक डिजाइन और एनिमेशन में उपयोग कर रहे हैं जो इसे एक समकालीन पहचान दे रहा है।

सरकारी नीतियां और संस्थागत प्रयास भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात सरकार ने इन कलाओं को पुनर्जीवित करने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं।

- सांस्कृतिक संस्थानों की भूमिका: ललित कला अकादमी और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र जैसे संस्थान इन कलाओं के प्रलेखन और प्रदर्शनियों के माध्यम से इन्हें मुख्यधारा में ला रहे हैं।
- शिल्पग्राम की अवधारणा: उदयपुर और अन्य स्थानों पर स्थित शिल्पग्राम कलाकारों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ वे सीधे पर्यटकों से जुड़ सकते हैं।
- आर्थिक प्रोत्साहन: एक जिला एक उत्पाद जैसी योजनाओं ने क्षेत्रीय लोक कलाओं को वैश्विक बाजार तक पहुँचाने में मदद की है।

## उपसंहार (CONCLUSION)

भारतीय लोक एवं जनजातीय कला केवल रेखाओं और रंगों का संयोजन नहीं है, बल्कि यह भारत की उस 'अविभाज्य चेतना' का प्रतीक है जो हजारों वर्षों से निरंतर प्रवाहित हो रही है। इस शोध पत्र के विस्तृत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोक कला और जनजातीय कला केवल सौंदर्यबोध के माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के आधार स्तंभ हैं। ये कलाएँ सहस्राब्दियों से चली आ रही उस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं जहाँ 'सृजन' और 'जीवन' के बीच कोई स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं है।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि:

- कला जीवन है लोक और जनजातीय समाजों के लिए कला कोई अलग विधा नहीं है बल्कि यह उनके जीवन चक्र जन्म विवाह मृत्यु का अभिन्न अंग है।
- प्रकृति का सम्मान ये कलाएँ आज के क्लाइमेट चेंज के दौर में हमें सिखाती हैं कि प्रकृति का दोहन किए बिना भी एक सौंदर्यपूर्ण समाज का निर्माण संभव है।
- अनंत यात्रा कला के स्वरूप बदल सकते हैं (दीवार से कैनवास तक लेकिन उसकी मूल भावना जो मनुष्य को उसकी जड़ों से जोड़ती है सदैव एक जैसी रहनी चाहिए।
- पारिस्थितिक संतुलन लोक और जनजातीय कलाएँ हमें पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाकर जीने की प्रेरणा देती हैं। प्राकृतिक रंगों और स्थानीय सामग्रियों का उपयोग यह सिद्ध करता है कि कला और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक हैं।
- सामुदायिक सशक्तिकरण इन कला रूपों ने विशेष रूप से ग्रामीण और जनजातीय महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है। यह उनके मौन प्रतिरोध और उनकी पहचान की मुखर अभिव्यक्ति है।
- निरंतरता और परिवर्तन वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप इन कलाओं के माध्यम तो बदले हैं लेकिन इनका मूल दर्शन और आध्यात्मिक भाव आज भी अपरिवर्तित है।

वैश्विक पहचान भारतीय लोक कलाओं ने अंतरराष्ट्रीय कला बाज़ार में अपनी एक विशिष्ट जगह बनाई है जो भारत की सॉफ्ट पावर को वैश्विक मंच पर मजबूती प्रदान करती है।

## शोध के मुख्य निष्कर्ष (KEY FINDINGS)

- लोक कला सामूहिक चेतना का प्रतीक है जबकि जनजातीय कला आदिम और अनुष्ठानिक है।
- दोनों ही कलाएँ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास का संदेश देती हैं।
- आधुनिक बाजार में इनके अस्तित्व को बचाने के लिए तकनीक और परंपरा का मेल आवश्यक है।

**निष्कर्षतः** लोक एवं जनजातीय कला का संरक्षण केवल पुरानी परंपराओं का संरक्षण नहीं है, बल्कि उस मानवीय संवेदना और सामुदायिक भावना को बचाए रखना है जो आधुनिकता की अंधी दौड़ में लुप्त होती जा रही है। हमें इन कलाकारों को 'मजदूर' की श्रेणी से ऊपर उठाकर 'सांस्कृतिक राजदूत' के रूप में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है

## REFERENCES

- Dwivedi, H. P. (n.d.). Folk Background of Indian Culture (भारतीय संस्कृति की लोक पृष्ठभूमि). Rajkamal Prakashan.
- History and Folk Culture of Central Asia. (n.d.). (मध्य एशिया का इतिहास एवं लोक संस्कृति). Kitab Mahal.
- Indian Council for Cultural Relations. (n.d.). Gaganachal: Folk Art Special Issue (गगनांचल: लोक कला विशेषांक). Annual Journal.
- Indira Gandhi National Centre for the Arts. (n.d.). Tribal Art Documentation Report (जनजातीय कला प्रलेखन प्रतिवेदन). IGNCA Publication.
- Lalit Kala Akademi. (n.d.). Research Journal: Contemporary Art (अनुसंधान पत्रिका: समकालीन कला). Lalit Kala Akademi Journal.
- Ministry of Culture, Government of India. (n.d.). Annual Reports (वार्षिक प्रतिवेदन). Government of India.
- Pandey, S. (n.d.). Indian Tribal Art and Culture (भारतीय जनजातीय कला एवं संस्कृति). National Book Trust.
- Verma, A. B. (2020). History of Indian Painting (भारतीय चित्रकला का इतिहास). Prakash Book Depot.